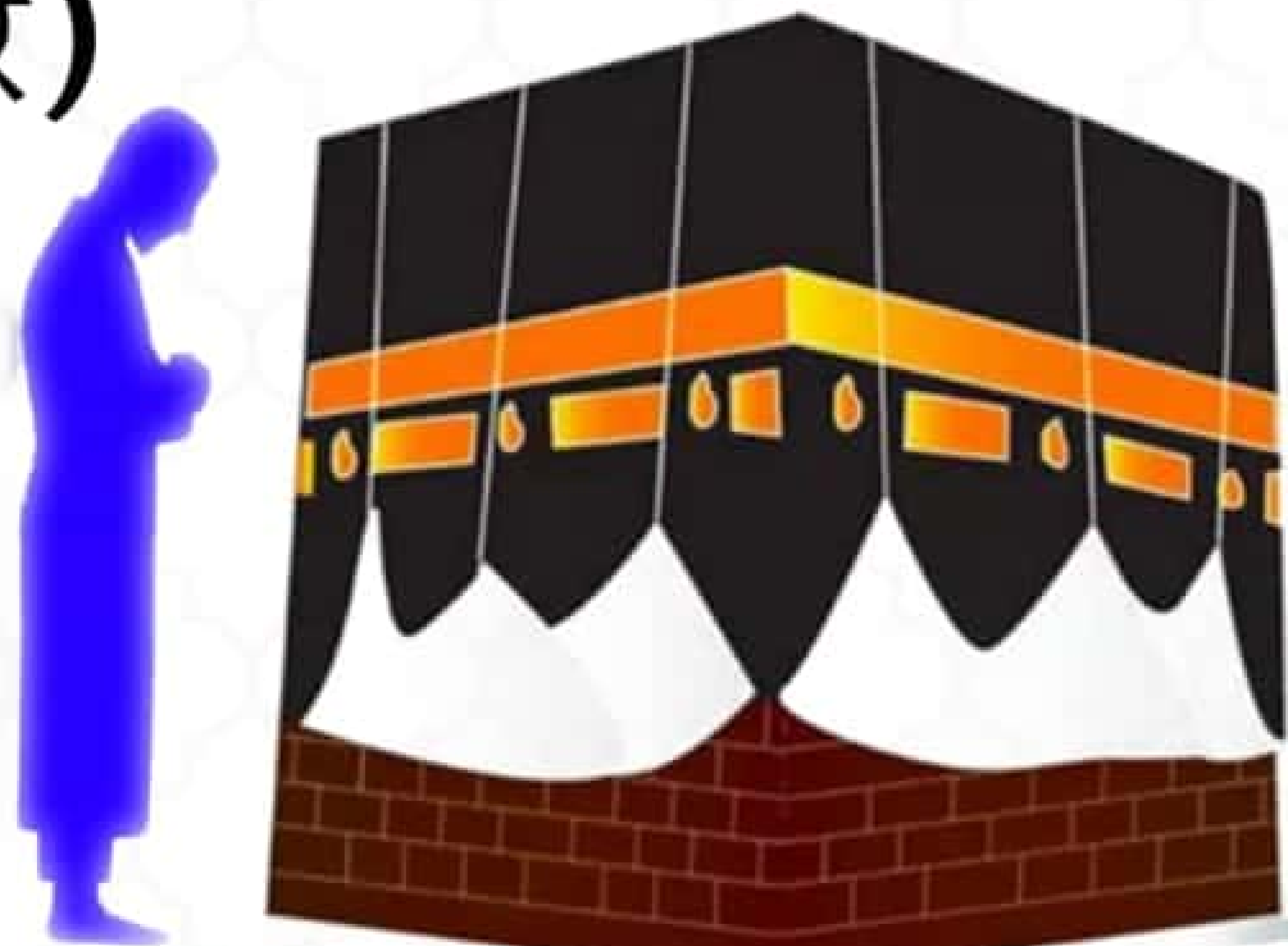
عن حُمَيْدٍ السَّاعِدِيَّ يَقُولُ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم:

إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ، اسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ، وَرَفَعَ يَدَيْهِ، وَقَالَ: اللهُ أَكْبَرُ

हुमैद साईदी رضي الله عنه रिवायत है उन्होंने फरमाया: रसूलुल्लाह ﷺ जब नमाज़ के लिए खड़े होते किबले की तरफ मुंह करते, अपने दोनों हाथ उठाते और कहते (अल्लाह हू अकबर)

अल्लाह सबसे बड़ा है



📚 **(सुनन इब्ने माजा ८०३)**

हाथों के उठाने की कैफियत

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ فِي الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ

अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه कहते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा कि जब आप नमाज़ के लिए खड़े हुए तो तकबीर तहरीमा के वक्त आप ने रफा यदैन किया, आप ने दोनों हाथों को मुंडो (कंधों) तक उठाया




📚 (सहीह बुखारी ७३६)

और हाथों का कानों तक उठाना भी साबित है

📚 (सहीह मुस्लिम ३९१)

صلوا كما رأيتموني أصلي

३ आइए नमाज़ नबवी ﷺ सीखें

सीने पर हाथ बांधना

كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَضَعُ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى يَدِهِ
الْيُسْرَى ثُمَّ يَشُدُّ بَيْنَهُمَا عَلَى صَدْرِهِ وَهُوَ فِي الصَّلَاةِ

रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ के दौरान में अपना दायां हाथ बाएं के ऊपर रखते और इन्हें अपने सीने पर बांधा करते थे

📚 (सुनन अबी दाऊद ७५९)

वायेल बिन हज्रर कहते हैं मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ में नमाज़ पढ़ी तो आप ने अपना दायां हाथ बाएं पर रखा और सीने पर रखा

📚 (सहीह इब्न खुज़ैमा ४७९)



صلوا كما رأيتموني أصلي

४ आइए नमाज़ नबवी ﷺ सीखें

दुआ ए सना

रसूलुल्लाह ﷺ तकबीर तहरीमा और किरात के दरमियान बगैर आवाज़ के ये दुआ पड़ते थे

اللَّهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ
وَالْمَغْرِبِ، اللَّهُمَّ نَقِّنِي مِنَ الْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ
مِنَ الدَّنَسِ، اللَّهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَايَ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ

📚 (सहीह बुखारी ७४४)



और ये दुआ भी आप ﷺ से साबित है

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى
جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ

📚 (सुनन अबू दाऊद ७७५)

Mudassir Rahmani
rahmanimu | Fahm-e-salaf
salafimanhaj2 | SpreadTawheed
91 8767498442
rahmanimu
mudassir_1989
rahmanimu

صلوا كما رأيتموني أصلي

٦

आइए नमाज़ नबवी ﷺ सीखें

किरत से पहले आऊज़ु बिल्ला और बिस्मिल्लाह पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ दुआ ए सना के बाद तऊज़ पढ़ते

أَعُوذُ بِاللهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ مِنْ هَمْزِهِ وَنَفْخِهِ وَنَفْثِهِ

मैं अल्लाह की पनाह तलब करता हूं जो हर आवाज़ को सुनने वाला है और हर चीज़ को जानने वाला है मरदूद शैतान के शर से उसके खतरे से इसकी फूकों से उसके वसोसों से

📚 **(सुनन अबू दाऊद ७७५)**

फिर आप ﷺ आहिस्ता بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ते हज़रत अनस رضي الله عنه फरमाते हैं: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ अबू बकर, उमर और उस्मान رضي الله عنه के साथ नमाज़ पढ़ी, मैंने उन में से किसी को बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम पढ़ते नहीं सुना 📚 **(सहीह मुस्लिम ८९०)**

दूसरी रिवायत में है (बिस्मिल्लाह) तेज़ आवाज़ में नहीं पढ़ते थे

📚 **(मुसनद अहमद १३२५९)**



सूरह फातिहा पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ताऊज़ और तस्मिया के बाद सूरह फातिहा पढ़ा करते थे

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۝ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝ مٰلِكِ يَوۡمِ الدِّيۡنِ

۝ اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ ۝ اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۝

صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ ۝

📚 (मुसनद अहमद २३३३७)

उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहू अन्हा नबी करीम ﷺ की किरत की कैफियत बयान करते हुए फरमाती हैं कि आप एक एक आयत ठहर ठहर कर पढ़ा करते थे

📚 (सहीह मुस्लिम ३९१)



صلوا كما رأيتموني أصلي

सूरह फातिहा के बगैर नमाज़ नहीं!

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: لَا صَلَاةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ

उस शख्स की नमाज़ नहीं जो सूरह फातिहा ना पड़े

📚 (सहीह बुखारी ७५६)

इमाम बुखारी रह ने अपनी सहीह में बाब बांधा है (ईमाम मुक्तदी के लिए तमाम हज़री और सफरी नमाज़ों में सुरह फातिहा पढ़ना वाजिब है चाहिए नमाज़ जहरी हो या सरी

📚 (बुखारी,किताबुल अज़ान)

दूसरी हदीस आप ﷺ ने फरमाया: हर वो नमाज़ जिस में सुरह फातिहा ना पड़ी जाए वो नाकिस नाकिस है

📚 (सुनन इब्ने माजा ८४१, हसन)



صلوا كما رأيتموني أصلي

٨

आइए नमाज़ नबवी ﷺ सीखें

इमाम के पीछे बुलंद आवाज़ से आमीन कहना

عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَرَأَ: وَلَا الضَّالِّينَ [آخر سورة الفاتحة] قَالَ: آمِينَ وَرَفَعَ بِهَا صَوْتَهُ

वाएल बिन हुज्र رَضِيَ اللهُ عَنْهُ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब (सूरह फातिहा के आखिर में) < وَلَا الضَّالِّينَ > कहते तो <आमीन> कहते और उसके साथ अपनी आवाज़ को बुलंद करते

📚 **(सुनन अबू दाऊद ९३२)**



हजरत अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि जब इमाम आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो क्योंकि जिसकी आमीन मलाइका के आमीन के साथ हो गई उसके पीछले तमाम गुनाह माफ कर दिए जाएंगे

📚 **(बुखारी ७८०,मुस्लिम ४१०)**

صلوا كما رأيتموني أصلي

९ आइए नमाज़ नबवी ﷺ सीखें

सिर्री नमाज़ में सूरह फातिहा के बाद दूसरी सूरत पढ़ना बेहतर है

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: كُنَّا نَقْرَأُ فِي الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ خَلْفَ الْإِمَامِ فِي
الرَّكْعَتَيْنِ الْأُولَيَيْنِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ وَسُورَةٍ، وَفِي الْأُخْرَيَيْنِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ

जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है उन्होंने फरमाया: हम लोग इमाम के पीछे ज़ोहर और असर की नमाज़ों में पहली दो रकातों में सूरह फातिहा और कोई और सूरत पढ़ते थे और बाद की दो रकातों में सिर्फ सूरह फातिहा पढ़ते थे

📚 **(सुनन इब्ने माजा ८४३)**

अबू हुरैरा رضي الله عنه से फरमाते हैं: अगर तुम सूरह फातिहा से ज़्यादा ना पढ़ो तो वो तुम्हारे लिए काफी हो जाएगी और अगर ज़ाएद (क़ुरआन) पढ़ लो तो बेहतर है

📚 **(बुखारी ७७२ ,मुस्लिम ३९६)**



रफा उल यदैन किन-किन मुकामात पर है?

أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا قَالَ: سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَرَفَعَ ذَلِكَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى نَبِيِّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

अब्दुल्लाह बिन उम्र رضي الله عنه जब नमाज़ में दाखिल होते तो पहले तकबीर तहरीमा कहते और साथ ही रफा यदैन करते इसी तरह जब वो रुकू करते तब और जब समीअल्लाहु ल्लिमन हमीदा कहते तब भी दोनों हाथों को उठाते और जब काआदह ऊला से उठते तब भी रफा यदैन करते आप ने इस फआल को नबी करीम ﷺ तक पहुंचाया (कि आप ﷺ इसी तरह नमाज़ पढ़ा करते थे

📚 (सहीह बुखारी ७३९)



रुकुअ जाते वक़्त तकबीर और रफा उल यदैन

आप ﷺ रुकुअ जाते वक़्त (अल्लाह अकबर) कहते और अपने हाथों को कंधों तक उठाते ।

عَن عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا، قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِیَّ صلى الله عليه وآله وسلم افْتَتَحَ التَّكْبِيرَ فِي الصَّلاَةِ، فَرَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ يُكَبِّرُ حَتَّى يَجْعَلَهُمَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ، وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَهُ،



अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. ने कहा कि मैंने नबी ﷺ को देखा कि आप ﷺ नमाज तकबीरे तहरीमा से शुरू करते और तकबीर करते वक़्त अपने दोनों हाथों को मुंढो (कंधों) तक उठाकर जाते हो और जब रुकूअ के लिए तकबीर कहते तब भी इसी तरह करते

(सही बुखारी 738)

अगर पहले तकबीर और बाद में रफा उल यदैन कर लिया जाए तो यह भी जायज है (सुनन अबू दाऊद 730)

रुकुअ की कैफ़ियत

अबू हुमैद साअदी रजि. ने नबी ﷺ के नमाज की कैफ़ियत करते हुए फरमाते है

ثُمَّ يَرْكَعُ وَيَضَعُ رَاحَتَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ، ثُمَّ يَعْتَدِلُ فَلَا يَصُبُّ رَأْسَهُ وَلَا يُقْنِعُ



आप ﷺ फिर रुकुअ करते और अपनी हथेलियों को घुटनों पर रखते और ऐतदाल व सुकून से रुकुअ करते ना सर को झुकाते ना ऊपर उठाते

(सुनन अबू दाऊद- 730)

रुकुअ की दुवाएं

(١) سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ (सही मुस्लिम-1814)

मेरा अजीम रब हर ऐब से पाक है

(٢) سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي



ऐ अल्लाह! जो हमारा रब है, तू पाक है, हम तेरी तारीफ करते है, या अल्लाह ! मुझे बख्श दे । (सही बुखारी-794)

(٣) سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ، رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ

निहायत पाक है, मुक़द्दस है, फरिश्तों और रूह (जिब्राइल अलैहिस्सलाम) का रब (सही मुस्लिम-1091

रुकूअ से सर उठाने के बाद क्या कहें

وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ، رَفَعَهُمَا كَذَلِكَ أَيْضًا، وَقَالَ: سَمِعَ اللهُ
لِمَنْ حَمِدَهُ، رَبَّنَا وَلَكَ الحَمْدُ، وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ



आप ﷺ जब अपना सर रुकूअ से उठाते तो दोनों हाथ भी उठाते और रुकूअ से सर मुबारक उठाते हुए समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह, रब्बना लकल हम्द कहते थे सजदे में जाते वक़्त रफ़अ़ यदैन नहीं करते थे

(सही बुखारी 735)

صلوا كما رأيتموني أصلي

१५ आइये नमाज-ए- नबवी ﷺ सीखे

रुकुअ से उठने के बाद मुक़तदी क्या पढ़े ?

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا قَالَ
الإِمَامُ: سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، فَقُولُوا: اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الحَمْدُ،



हजरत अबू हुरैरह रजि. से रसूल ﷺ ने फरमाया जब इमाम समीअल्लाहु लिमन हमिदह कहे तो तुम अल्लाहुम्मा रब्बना लकल हम्द कहो

📚 (सही बुखारी-796)

رَبَّنَا وَلَكَ الحَمْدُ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ

(सही बुखारी-799) 📚यह दुआ पढ़ना भी साबित है

सजदह में जाते वक़्त ऊंट की तरह ना बैंठे

आप ﷺ अल्लाह अकबर कहते हुए सजदे में जाते

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا سَجَدَ أَحَدُكُمْ فَلَا
يَبْرُكْ كَمَا يَبْرُكُ الْبَعِيرُ وَلْيَضَعْ يَدَيْهِ قَبْلَ رُكْبَتَيْهِ

अबू हुरैरह रजि. ने बयान किया कि रसूल ﷺ ने फरमाया जब तुम में से कोई शख्स सजदह करें तो इस तरह ना बैठे जैसे ऊंट बैठता है बल्कि अपने हाथ अपने घुटनों से पहले (जमीन पर) रखें



(अबू दाऊद-840)

सात हड्डियों पर सजदह

इब्ने अब्बास ؓ से रीवायत है , इन्होंने कहा: नबी ﷺ ने फ़रमाया:" मुझे सात हड्डियों पर सजदह करने का हुकुम दिया गया है, पेशानी पर और अपने हाथ से नाक की तरफ़ इशारा किया, दोनों हाथों, दोनो घुटनों और दोनो पाओं की उंगलियों पर "।

(सहिह बुखारी :८१२)



सज्दे की कैफ़ियत

आप ﷺ सज्दे मैं अपने दोनों बाजू बगलों से हटा कर रखते

ثُمَّ يَهْوِى إِلَى الْأَرْضِ فَيُجَافِي يَدَيْهِ عَنْ جَنْبَيْهِ (सुनन अबू दाऊद-730)

(सज्दे में) अपने हाथों को अपने बगलों से दूर रखते



सजदे में पांवो की अंगुलियो को किबला रुख करना

فَإِذَا سَجَدَ وَضَعَ يَدَيْهِ غَيْرَ مُفْتَرِشٍ وَلَا قَابِضِهِمَا

وَاسْتَقْبَلَ بِأَطْرَافِ أَصَابِعِ رِجْلَيْهِ الْقِبْلَةَ (सही बुखारी-828)

और जब आप ﷺ ने सज्दह किया तो ना आप दोनों हाथों को बिछाए हुए थे और ना ही समेटे हुए थे और पांव की अंगुलियां किबला रुख थी ।

सज्दे में अपने बाज़ुओ को (जानवरों की तरह) जमीन पर ना बिछाए

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وآله وسلم قَالَ: «اعْتَدِلُوا فِي السُّجُودِ، وَلاَ يَبْسُطْ أَحَدُكُمْ ذِرَاعَيْهِ انْبِسَاطَ الْكَلْبِ» (सही बुखारी: 822)

अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है वो नबी ﷺ से बयान करते है कि आप ﷺ ने फरमाया सज्दे में ऐतदाल करो और तुम में से कोई अपनी कलाइया इस तरह ना फैलाये, जिस तरह कुत्ता बिछाता है ।



नोट- इस हुक्म में मर्द व औरतें सब शामिल है लिहाजा औरतों को भी चाहिए कि सज्दे में अपने बाजुओं को ना फैलाये ।

सज्दे की दुआएं

सजदे में बंदा अपने रब से बहुत ज्यादा करीब होता है इसलिए सजदे में खूब दुआएं करनी चाहिए दर्ज जेल दुआओं का पढ़ना साबित है

(1) سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى (सही मुस्लिम- 772)

(2) سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ، رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ (सही मुस्लिम- 487)

(3) سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي

(सही बुखारी- 817)



صلوا كما رأيتموني أصلي

२१ आइये नमाज-ए-नबवी ﷺ सीखे

सज्दे में एड़ियों को मिलाकर रखना

عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: فَقَدْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْلَةً مِنَ الْفِرَاشِ
فَالْتَمَسْتُهُ فَوَقَعَتْ يَدِي عَلَى بَطْنِ قَدَمَيْهِ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ وَهُمَا مَنْصُوبَتَانِ

हज़रत आईशा रज़ी॰ फरमाती है कि मेने आज रात रसूल ﷺ को बिस्तर पर ना पाया तो आपको टटोलने लगी मेरा हाथ आपके पाँव के तलवे पर पड़ा इस वक़्त आप सज्दे मे थे आपके दोनों पाँव खड़े थे

(सही मुस्लिम #486)



अबू खुजेमा की रिवायत मे है कि आप ﷺ कि एड़िया ऐक दूसरे से मिली हुए थी और पेरो की अंगुलिया क़िबला रुख थी

(सही इब्ने खुजेमा #654)

सजदों के दरमियान बैठने की कैफ़ियत

अबू हामिद साअदी रजी॰ प्यारे नबी ﷺ का तरीका बयान करते हुए फरमाते है

ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ وَيَثْنِي رِجْلَهُ الْيُسْرَى فَيَقْعُدُ عَلَيْهَا،

फिर (आप ﷺ) अपना सर उठाते और अपना बाया पाँव मोड़ लेते और इसके उपर बैठ जाते

(सुनन अबू दाऊद #730)



आप ﷺ सज्दे से उठकर जलसे में थोड़ी देर बैठते रहते कि हत्ता कि बाज कहने वाला कह दिया कि आप भूल गए है

(सही बुखारी #821, सही मुस्लिम #472)

सजदों के दरमियान क्या पढ़े

इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि नबी ए करीम ﷺ दो सजदों के दरमियान यह दुआ पढ़ा करते थे

(सुनन अबू दाऊद 850)

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَعَافِنِي وَاهْدِنِي وَارْزُقْنِي



यह दुआ भी पढ़ना साबित है

رَبِّ اغْفِرْ لِي رَبِّ اغْفِرْ لِي

(सुनन अबू दाऊद 872)

दूसरे सज्दे के बाद इत्मीनान से बैठना

अबू हूरैरह रजि. बयान करते है कि नबी ﷺ ने फरमाया
फिर सजदा करो और सज्दे में इत्मीनान से रहो ।

ثُمَّ اسْجُدْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا، ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ جَالِسًا،

फिर सर उठाकर इत्मीनान से बैठ जाओ

(सही बुखारी: 757)



अबू दाऊद की रिवायत में है कि प्यारे नबी ﷺ दूसरे सज्दे से उठने के बाद इतनी देर बैठते कि हर हड्डी अपनी जगह पर आ जाती

(सुनन अबू दाऊद: 730)

नोट- सजदा करते, सजदा से सर उठाते और सज्दे के दरमियान रफायदैन साबित नहीं ।

अल हम्दुलिल्लाह यहां पर एक रकअत का तरीका ए नमाज नबवी ﷺ मुकम्मल हुई ।

दो सजदों के दरम्यान एड़ियों पर बैठना

ताऊस रहमतुल्लाह अलेह फरमाते है कि हमने सैयदना इब्ने अब्बास रजि. अन्हुमा से दो सजदों के दरम्यान एड़ियो पर बैठने के मुताल्लिक पूछा: तो उन्होंने कहा यह सुन्नत है, हमने कहा : हम तो इसे पांव पर बोझ या आदमी के लिए बाइसे मशक्कत खयाल करते थे ।

فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ هِيَ سُنَّةُ نَبِيِّكَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ



इब्ने अब्बास रजि. अन्हुमा फरमाते है कि यह आप के नबी ﷺ. की सुन्नत है

(सही मुस्लिम: 536)

उठते वक़्त हाथों की कैफ़ियत

हज़रत मालिक बिन हैरिस रजि. नबी-ए-करीम ﷺ के नमाज की कैफ़ियत बयान करते हुए फरमाते है

وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ عَنِ السَّجْدَةِ الثَّانِيَةِ جَلَسَ وَاعْتَمَدَ عَلَى الأَرْضِ، ثُمَّ قَامَ

जब अपना सर दूसरे सज्दे से उठाते तो बैठ जाते, जमीन पर टेक लगाकर फिर उठते थे

(सही बुखारी- 824)



बेहक़ी की रिवायत में है कि आप ﷺ जब खड़े होते तो हाथो के बल उठाते और हाथ गौया आटा गूंथ रहे थे

(सुनन कबीर बेहक़ी 2/135)

तशह्हुद में हाथो की कैफ़ियत

عَنِ ابْنِ عُمَرَ: «أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا قَعَدَ فِي التَّشَهُّدِ وَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى
عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُسْرَى، وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُمْنَى، وَعَقَدَ ثَلَاثَةً
وَخَمْسِينَ، وَأَشَارَ بِالسَّبَّابَةِ»



हज़रत इब्ने उमर रजि. से रिवायत है रसूल ﷺ जब तशहदुद में बैठते तो अपना बाया हाथ अपने बाये घुटने पर और अपना दाया हाथ अपने दाया घुटने पर रखते और अंगुलियों से तरेपन (53) की गिरह (गांठ) बनाते और शहादत की अंगुली से इशारा करते थे

(सही मुस्लिम- 1310)

तशहदुद में पढ़ी जाने वाली दुवाएं

(1) अत्तहिय्यात

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्स ल-वातु (सही बुखारी: 1202)

(2) दुरुदे इब्राहीमी)

अल्लाहुम म सल्लि अला मुहम्मदिवं-व (सही बुखारी: 3370)

(3) सलाम से पहले कई मसनून दुआएं साबित हैं आपको जो याद हो पढ़ ले

3.1 अल्लाहुम-म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी (सही बुखारी: 834)

3.2 अल्लाहुम-म इन्नी अऊजबि-क मिन् अज़ाबिल्-क़बरि (सही बुखारी: 832)

तवर्रुक करना

عن أبی حمید الساعدی رضی اللہ عنہ قال: إِذَا كَانَتِ السَّجْدَةُ الَّتِي فِيهَا التَّسْلِيمُ أَخَّرَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَقَعَدَ مُتَوَرِّكًا عَلَى شِقِّهِ الْأَيْسَرِ



अबू हमीद साअदी रजि. फरमाते है, जब (आप सल्ल.) इस सज्दे में होते जिस में सलाम करने होता (तशहदूद में) फिर वह अपने बाएं पैर को अपने दाहिने पैर के नीचे से निकाल कर अपनी बाईं ओर बैठ जाते ।

(सुनन अबू दाऊद- 730)

दाएं बाएं सलाम फेरना।

عَنْ عَبْدِ اللهِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يُسَلِّمُ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ شِمَالِهِ، حَتَّى يُرَى بَيَاضُ خَدِّهِ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ، السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ

अब्दुल्लाह बिन मसऊद ؓ से रिवायत है के नबी करीम ﷺ (नमाज़ के इख़तेताम पर) अपनी दाईं और बाईं तरफ़ सलाम किया करते थे, हत्ता के आप के रुख़सारों की सफ़ेदी देखी जाती थी।(और आप कहते थे)

«السلام عليكم و رحمة الله السلام عليكم و رحمة الله»

(अबू दाऊद :९९६)